हमारी बात

कुछ साल पहले हम एक गांव गए। एक घर से गीतों की आवाज आ रही थी। हम भी उधर ही चल दिए। एक घर के आंगन में औरतें जच्चा (बच्चा होने के गीत) गा रही थीं। गीत कुछ इस तरह थे: 'जियरा हो गया ठंडा, लल्ले का मुंह देखकर... इक तारा जो टूटा गगन में, लल्ला पैदा हुए मधुबन में...हो लल्ला रे, तेरे बिना क्या जीना... होरिल जनाई (लड़का पैदा करा) नेग मांगे, नेग ऐसा देना याद करे दिन रैना...'। सभी गीतों में लड़के के जन्म की खुशी थी।

हमने पूछा: "क्या लड़की होने पर भी यही गीत गाती हो? कुछ सुनाओ।" औरतें एक दूसरे का मुंह ताकने लगीं। एक बड़ी-बूढ़ी बोली, "बहिन जी, यह गांव है। शहरों में लड़की की खुशी भले गा लो, पर गांवों में नहीं गवती लड़की की खुशी।" इतने में एक गीत गूंजा: 'लल्ली हो गई रे सजनवा...सासुल आवैं चेरूआ चढ़ावे मांगे नेग... लल्ला होता सब कुछ देती, लल्ली का क्या नेग।'

लड़की होने पर एक गीत और सुना: "अंगना बिछा दई खटिया, हाय राम हमरे हो गई बिटिया...बिटिया हुई की ससुर जी ने सुनी, हाथ से छूट गई लठिया... टूट गई लठिया, हाय राम हो गई बिटिया।"

यह घटना लगभग दस साल पहले की है, लेकिन क्या आज हालात में कोई बुनियादी बदलाव आया है? आज भी (गांवों में ही नहीं शहरों में भी) गर्भवती औरतों की 'अल्ट्रासाउंड' तकनीक से जांच करा कर गर्भ में लड़की होने का प्रमाण पा गर्भपात करा दिया जाता है।

कौन बदलेगा इन धारणाओं को? हमारे विचार में औरतों को ही इसमें पहल करनी होगी। यह जानते और मानते हुए भी कि बेटियों में मां-बाप के प्रति ज्यादा मोह-ममता होती है, लड़के की लालसा बनी रहती है। थोड़े-बहुत अपवाद जरूर देखने को मिलते हैं जहां लड़की होने पर भी लड़के के बराबर खुशी मनाई जाती है, लेकिन ऐसी मिसालें आटे में नमक के बराबर है।

हमारा बहनों से अनुरोध है कि वे यह संकल्प लें कि लड़की होने पर न वे स्वयं दुखी होंगी, न पड़ोस-मोहल्ले में ऐसी भावना को पनपने देंगी। सिर्फ सरकारी कानूनों से बदलाव नहीं आने वाला है। घर-परिवार और समाज में लड़की को लड़के के बराबर या उससे भी बढ़कर मानना आप और हम पर निर्भर है।

शारदा जैन